

तलापयिा पार्वोवायरस

स्रोत: द हट्टि

तलापयिा पार्वोवायरस (TiPV) की भारत में पहली उपस्थिति तिमलिनाडु में देखी गई है, जहाँ इसका देश के जलीय कृषि पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

- यह वायरस मीठे जल की मछली प्रजाति **तलापयिा** में पाया गया है और उच्च मृत्यु दर के कारक के चलते इसको लेकर चिंता बढ़ गई है।

तलापयिा पार्वोवायरस:

- **परचिय:**
 - TiPV एक वायरल रोगजनक है जो मुख्य रूप से तलापयिा को प्रभावित करता है।
 - यह पारवोविरिडिा परिवार से संबंधित है, जो अपने छोटे, अपरबिद्ध, सगिल स्ट्रैण्डेड DNA वायरस के लिये जाना जाता है।
- **उद्भव और प्रभाव:**
 - पहली बार इसकी उपस्थिति वर्ष 2019 में चीन में और वर्ष 2021 में थाईलैंड में दर्ज की गई। भारत TiPV की घटना की रिपोर्ट करने वाला तीसरा देश है।
 - TiPV के कारण मछली फार्मों पर मृत्यु दर 30% से 50% तक देखी गई है।
 - साथ ही प्रयोगशाला में इसने 100% मृत्यु दर दर्ज की है जो इसके वनिाशकारी प्रभाव को उजागर करती है।
- **TiPV प्रकोप के परिणाम:**
 - TiPV का प्रकोप मीठे जल के नकियों की जैवविविधता और पारस्थितिकी के लिये भी खतरा उत्पन्न कर सकता है क्योंकि तलापयिा एक आक्रामक प्रजाति है जो भोजन एवं आवास स्थान के लिये मछली की स्थानीय प्रजातियों के साथ प्रतस्पर्धा कर सकती है।
 - TiPV का प्रकोप उन लोगों की खाद्य सुरक्षा और पोषण को भी प्रभावित कर सकता है जो भोजन में प्रोटीन और आय के स्रोत के रूप में तलापयिा पर निर्भर हैं।

तलापयिा मछली के बारे में मुख्य तथ्य:

- **परचिय :**
 - तलापयिा मीठे जल की मछली प्रजाति है जिसका पालन भारत में व्यापक स्तर पर किया जाता है और भोजन के रूप में उपयोग की जाती है। यह **परसीफोरमेस प्रजाति** के अंतर्गत **सकिलडिा परिवार** से संबंधित है।
 - ये मछलियाँ **मूलतः अफ्रीका** में पाई जाती हैं और व्यापक रूप से खाद्य स्रोत के रूप में लोकप्रियता हासिल कर चुकी हैं।



//

■ **भारत में तिलापिया का पालन :**

- तिलापिया का पालन देश के विभिन्न हिस्सों, विशेषकर आंध्र प्रदेश और केरल में किया जाता है।
- नील तिलापिया और मोज़ाम्बिक तिलापिया सहित विभिन्न तिलापिया प्रजातियों के आगमन/प्रवेश के परिणामस्वरूप विविध मत्स्यपालन पद्धतियों की उत्पत्ति हुई है।
 - 1970 के दशक में लाई गई नील तिलापिया को इसके बड़े आकार और उत्पादन के पैमाने के लिये पसंद किया जाता है।
 - **मोज़ाम्बिक तिलापिया**, जिसे तमिल में "जलाबी" कहा जाता है, को 1950 के दशक में भारतीय अलवणीय जल नकियों में छोड़ा गया था।
 - मोज़ाम्बिक तिलापिया **जल में कम ऑक्सीजन स्तर के प्रति अपनी अनुकूलनशीलता** के लिये जानी जाती है। यह विभिन्न प्रकार के जलीय वातावरणों में जीवित रह सकती है।
- भारत सरकार ने वर्ष 1970 में विशिष्ट तिलापिया प्रजातियों, अर्थात् **ओरयोक्रोमिस निलोटिकस (Oreochromis Niloticus)** एवं **लाल संकर प्रजाति** के आयात को अधिकृत किया। इन प्रजातियों को इनके तेज़ी से विकास और बाज़ार की मांग के कारण पसंद किया गया, जिससे मत्स्यपालन पर नियंत्रण बना रहा।